स्या रे एवा करम करया हता कामनी, धाम मांहें धणी आगल आधार।
हवे काढ़ो मोह जल थी बूडती कर ग्रही, कहे महामती मारा भरतार।। ४ ।।

हे धनी! परमधाम में आपके सामने हमने ऐसा कौन सा खोटा काम किया था? महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! अब इस भवसागर में डूबती हुई ब्रह्मसृष्टियों को हाथ पकड़कर निकालो।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। ४३६ ।।

हारे वाला रल झलावियो रामतें रोवरावियो, जुजवे पर्वतों पाड़्या रे पुकार।
रणवगडा मांहें रोई कहे कामनी, धणी विना धिक धिक आ रे आकार।। १ ।।

हे मेरे वालाजी! आपने हमको इस खेल में ऐसा झटका दिया और रुलाया कि हम पर्वतों में भटकते हुए चिल्ला रहे हैं। इस वीरान जंगल में हम अंगनाएं रो-रोकर कहती हैं कि धनी! आपके बिना इस शरीर को धिक्कार है।

वेदना विखम रस लीधां अमें विरहतणां, हवे दीन थई कहूं वारंवार।
सुपनमां दुख सह्या घणां रासमां, जागतां दुख न सेहेवाए लगार।। २ ।।

हम आपके वियोग में विरह का कठिन रस ले रही हैं और अब (अहंकार छोड़कर) दीन होकर बार-बार विनती करती हैं कि रास में तो स्वप्न में हमने आपके विरह के दुःख को सहन किया, परन्तु अब पहचान हो जाने पर विरह का दुःख सहन नहीं होता।

दंत तरणां लई तारुणी तलफियो, तमें बाहो दाहो दीन दातार।
खमाए नहीं कठण एवी कसनी, राखो चरण तले सरण साधार।। ३ ।।

हम आपकी किशोर अंगनाएं दांतों में तिनका दबाकर चिल्ला रही हैं, हे हमारे दीन दातार! हमारी विरह की अग्नि को बुझाओ। अब हमसे यह विरह का कठोर दुःख सहन नहीं होता। हमें आप अपने चरणों में स्थान दो।

हवे हारया हारया हूं कहूं वार केटली, राखो रोतियो करो निरमल नार।
कहे महामती मेहेबूब मारा धणी, आ रे अर्ज रखे हांसीमां उतार।। ४ ।।

अब मैं कितनी बार कहूं कि मैं हार गई-हार गई। अब हमारा रोना बन्द करके अपने प्यार से निर्मल करो। श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! मेरी इस विनती को हंसी में ना टाल देना।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। ४४० ।।

हारे वाला बंध पड़्या बल हरया तारे फंदड़े, बंध विना जाए बांधियो हार।
हंसिए रोइए पड़िए पछताइए, पण छूटे नहीं जे लागी लार कतार।। १ ।।

हे वालाजी! आपके खेल दिखाने की इच्छा से हम माया के बन्धन में पड़ गए और अपने इश्क की शक्ति को खो बैठे। देखा जाये तो जाहेरी बन्धन कुछ नहीं, परन्तु देखा देखी चींटी हार की तरह माया में लिपटे चले जा रहे हैं। यहां से निकलने के लिए भले हम रोएं, हंसें और पश्चाताप भी करें, तो भी चींटी हार की तरह यह कबीले या बन्धन छूटते नहीं हैं।

जेहेर चढ़्यो हाथ पांउं झटकतियो, सरवा अंग साले कोई सके न उतार।
समरथ सुखथाय साथने ततखिण, गुणवंता गारुडी जेहेर तेहेने तेणी विधें झार।। २ ।।

माया का ऐसा जहर चढ़ गया है कि हम इसमें हाथ पांव झटकते हैं और इस जहर से सब अंगों में दुःख होता है। इस जहर को कोई उतार नहीं सकता। हे समर्थ! गुणवान ओझा की भांति हमारे माया के जहर को झाड़ फूंककर निकाल दें जिससे सुन्दरसाथ सुखी हो जाए।